श्री व्यंकटेशावरील पदें

पद ४०

(राग: यमन कल्याण - ताल: दीपचंदी)

पाहि पाहि मला श्री व्यंकटा।।ध्रु.।। मस्तकिं मुगुट कानी कुंडल झळके। पीतांबर शोभत की कटा।।१।। दीनदयाळ प्रभु भक्ताचें कारण। उभा असे पुष्करणी तटा।।२।। माणिक म्हणे तुज शरण आलिया। वारिसि दुर्धर संकटा।।३।।